समय की मेगा सेल में हम क्या बटोर रहे हैं?



राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

परमात्मा ने हमें अनेक शक्तियाँ दी हैं-सहन करने की, सामना करने की, सही निर्णय लेने की, समाने की, क्षमा करने की, और परिस्थितियों को सहजता से पार करने की। ज्ञान भी हमारे पास है और इन शक्तियों की पहचान भी। फिर भी जब जीवन में कोई वास्तविक परिस्थिति आती है, कोई अपमान कर देता है, हमारी बात नहीं मानता या अचानक कोई परेशानी सामने आती है, तब लगता है जैसे हमारी शक्तियां कहीं छिप गई हैं।

यही हमारे पुरुषार्थ की सच्ची परीक्षा है। ज्ञान सुनते समय शांत रहना आसान है, लेकिन परिस्थिति के बीच उसी ज्ञान को याद रखना और व्यवहार में लाना ही वास्तविक सफलता है।

मान लीजिए, किसी बड़े मॉल में केवल दस मिनट के लिए मेगा सेल लगी है और इन दस मिनटों में जो भी सामान आप ले लेंगे, वह हमेशा के लिए आपका हो जाएगा। क्या आप इन दस मिनटों में किसी की बुराई करेंगे या सोशल मीडिया में समय गँवाएंगे? बिल्कुल नहीं। आप हर सेकंड का मूल्य समझकर उपयोगी वस्तुएं अपनी झोली में भरेंगे।

संगमयुग का यह समय भी एक आध्यात्मिक मेगा सेल जैसा है। समय सीमित है, लेकिन इस समय किया गया श्रेष्ठ पुरुषार्थ हमारे भविष्य की स्थायी आध्यात्मिक कमाई बन सकता है। फिर हम अपना समय व्यर्थ संकल्पों, तुलना, नाराज़गी, दूसरों की जाँच-पड़ताल और पुरानी बातों को दोहराने में क्यों गँवाएं?

हमारा प्रत्येक व्यर्थ संकल्प ऐसा है जैसे हमने अपनी आध्यात्मिक झोली से कोई कीमती हीरा बाहर फेंक दिया हो। इसके विपरित, हर श्रेष्ठ संकल्प, शांत प्रतिक्रिया और सकारात्मक कर्म हमारी कमाई बढ़ाता है।

जब कोई हमारी बात के विपरीत व्यवहार करे,तो तुरंत स्वयं से पूछें-"मैं कौन हूँ?" मैं देह नहीं, आत्मा हूँ। मैं शिवबाबा का बच्चा हूँ। मैं शांति, प्रेम और शक्ति का स्वरूप हूँ। बस कुछ सेकंड रुक जाएं। प्रतिक्रिया देने से पहले लिया गया यह छोटा-सा विराम हमें कमज़ोरी से शक्ति की ओर ले जाता है।

हमारी एक आध्यात्मिक सीट भी है- स्वमान की सीट। जब हम स्वमान में होते हैं, तो हमारी शक्तियां सहज रूप से काम करती हैं। लेकिन देहभान आते ही हम सोचने लगते हैं- "उसने मुझे ऐसा कैसे कह दिया?" यही वह क्षण है जब हमें अपनी सीट पर वापस बैठना है।

अमृतवेला केवल उठकर बैठने का नाम नहीं, बल्कि अपने रूहानी स्वरूप का अनुभव करने का समय है। स्वयं को लाइट और माइट का स्वरूप समझें और परमात्मा से शक्ति लेकर दिनभर उसका प्रयोग करें। दिन में बार-बार स्वयं से पूछें- आज मैं क्या कमा रहा हूँ? व्यर्थ संकल्प या श्रेष्ठ संकल्प? शिकायत या शक्ति? प्रतिक्रिया या शांति?"

अवसर हमारे पास है, ज्ञान हमारे पास है और मार्गदर्शन भी। आवश्यकता केवल इतनी है कि जो जानते हैं, उसे सही समय पर याद करें और जीवन में प्रयोग करें।

इसलिए आज से अपनी छोटी-छोटी चेकिंग शुरू करें। परिस्थिति आए-रुकें। एक क्षण स्मृति में आयें- "मैं आत्मा हूँ।" अपनी सीट पर बैठें- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।" फिर कर्म करें।

याद रखें, हर परिस्थिति हमें गिराने नहीं, अपनी शक्ति पहचानने का अवसर देने आती है। जब संगमयुग की यह मेगा सेल समाप्त होगी, तब हमारी झोली शांति, शक्ति, प्रेम और श्रेष्ठ संकल्पों के आध्यात्मिक खज़ाने से भरी हो।

विदेशी भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्न...
दादी जी के शब्दों में उत्तर

प्रश्नः- हमने सुना है कि आपको कभी अशुद्ध संकल्प नहीं आते हैं। अशुद्ध संकल्पों से हम कैसे फ्री हो सकते हैं?

उत्तरः- अशुद्ध संकल्प तब आते हैं जब मार्जिन हो। हमने कभी अशुद्ध देखा ही नहीं है, अशुद्ध का अनुभव ही नहीं है और साथ-साथ बाबा का वरदान भी है, बचपन से हम बाबा के पास आ गए। शुद्ध का अनुभव ज्यादा है इसलिए वह खींचता है। बाकी ऐसे नहीं है कि कोई कमी ही नहीं है। पुरुषार्थ तो रहता ही है। बाकी अशुद्ध तब आता है जब बुद्धि फ्री होती है। जिन्होंने शुरू से लेकर बाबा की पढ़ाई पर, श्रीमत पर पूरा अटेन्शन दिया है, बुद्धि को बिज़ी रखा है उनके पास अशुद्ध संकल्प आ ही नहीं सकते। बिज़ी है तो दूसरी चीज़ आने की फुर्सत ही नहीं। बुद्धि को बिज़ी रखो तो माया व व्यर्थ संकल्प-विकल्प आ नहीं सकते। जो बाबा ने सुनाया है उसकी गहराई में जाओ, अंतर्मुखी होकर उस पर मनन करो। इधर-उधर की बातों में इन्ट्रेस्ट न हो, संग से सम्भाल करो। अपना टीचर स्वयं बनकर अपने आपको रोज़ होमवर्क दो। तो व्यर्थ व अशुद्ध संकल्प से बचे रहेंगे। बाबा तो हमारा टीचर है ही लेकिन बाबा ने जो पढ़ाया है उसको अपने जीवन में उतारना अर्थात् अपना टीचर आप बनना, अपनी चेकिंग आप करना। जो अपने आपका टीचर बनता है वह सदा बिज़ी होने के कारण दूसरी सब बातों से फ्री हो जाता है।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

प्रश्नः- बापदादा जब आपके तन में आते हैं तो बापदादा के आने के पहले का, बापदादा जब तन में होते हैं, उस समय का और जब चले जाते हैं उस समय का आपका अनुभव क्या है?

उत्तरः- जब बापदादा को आना होता है तो प्रोग्राम अनुसार हम यहाँ आकर बैठते हैं, उस समय जैसे हम ट्रांस में जाते हैं, वैसे ही ट्रांस में जाते। उसमें अपनी मेहनत नहीं करनी पड़ती। योग में तो हम अपने पुरुषार्थ से बुद्धि को एकाग्र करते हैं लेकिन ट्रांस में अपनी मेहनत नहीं होती। सिर्फ बुद्धि को निरसंकल्प बनाना पड़ता है। जब तक हमारी बुद्धि में कोई संकल्प होता तब तक गुम नहीं हो सकती। ट्रांस माना गुम हो जाना। इसलिए जब हम यहाँ बैठते हैं, जिस समय बाबा को बुलाना होता है उस समय गुम हो जाती। जब ट्रांस में जाने लगती तो मालूम पड़ता है कि हम गुम हो रही है, गुम होते-होते जिस समय अपनी एकदम विस्मृति हो जाती, उस समय पता नहीं पड़ता। गुम होने के बाद कभी सीधा अपने को सूक्ष्मवतन में देखती हूँ, कभी-कभी रास्ते की फीलिंग आती है। ऐसे लगता है जैसे बादलों से पार होकर जा रहे हैं। यह साकार शरीर तो भूल जाता है लेकिन आकारी शरीर में अपने को देखती हूँ और आकार वतन में बाबा के सामने अपने को देखती हूँ। पहले थोड़ा बहुत मिलन होता है। बाबा को भी पता है- बच्चों से मिलने जाना है। फिर जिस समय बाबा प्रवेश होते हैं उस समय के बाद मुझे अपना पता नहीं होता है, फिर मैं न अपने को सूक्ष्मवतन में देखती हूँ, न परमधाम में। अपने शरीर का कोई कॉन्शियस भी नहीं होता। जितना टाइम बाबा होता है, उतना टाइम हमारी स्टेज जो होती है वह जैसे लोटने के बाद वर्णन कर सकती हूँ। जितना समय उस स्थिति में हूँ उतना टाइम पता नहीं पड़ता। मैं गुल्ज़ार हूँ, या मेरे तन में बाबा काम करा रहा है, इससे बात कर रहा है, इससे मिल रहा है, यह कॉन्शियस नहीं होती। उस समय जैसे स्मृति का स्विच ऑफ है। फिर लास्ट में बाबा जब वतन में जाते हैं तो फिर मिलन होता है, उस समय लगता है कि बीच का टाइम मेरे से मिस हुआ। जिस समय फिर से मिलन होता है उस समय ऐसी फीलिंग आती है जैसे नींद से उठने के बाद नींद का अनुभव होता है। ऐसे लगता है जैसे एकदम स्वीट साइलेन्स की स्टेज से, बहुत मीठी स्टेज से नीचे आई हूँ। यह भी नहीं कोई घूम कर आई हूँ, सैर करके आई हूँ या कोई से बातचीत करके आई हूँ,नहीं। ऐसे लगता जैसे ऊपर से नीचे आई हूँ इसलिए मुझे कुछ थकावट नहीं होती है। जिस समय बाबा शरीर में है। शरीर सेवा करता है, आत्मा भी जरूर अंदर ही होगी, बाहर तो इतना टाइम निकल नहीं सकती। लेकिन जैसे रेडियो टीवी का चैनल होता है। जिस चैनल का स्विच खोलेंगे वही आएगा। ऐसे ही मेरी समझ का चैनल ऑफ हो जाता है, हमको स्मृति नहीं रहती, पता नहीं होता कि बाबा इतनों से मिला। टाइम का भी पता नहीं पड़ता है। लेकिन स्वीट साइलेन्स की स्टेज बहुत प्यारी लगती है इसलिए आप सबसे भी ज्यादा रिफ्रेश हम होते हैं।



समस्या आने पर कारण न देकर निवारण स्वरूप बनें

- राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की मुरली का सार है - कारण व समस्या शब्द को छोड़ निवारण और समाधान स्वरूप बनो। मीठा मुखड़ा, मीठा मुख हो, रूखापन निकल जाए, नैचुरल मुस्कुराहट हो।

हमारे चेहरे में ज़रा भी चेंज न आए, ज़रा भी भारीपन न आए, ईश्वरीय स्नेह हमें रूहानियत में रहने देता है, जब तक मैं बाबा से ईश्वरीय स्नेह नहीं खींचती हूँ तब तक रूहानियत में नहीं रह सकती।

रूहानियत में रहना माना मेरे में पूरा इसेन्स भरा हो। कारण चारों ओर से आएंगे लेकिन हमारे मन में कोई ऐसी उत्पत्ति न हो जो चेहरे पर आ जाए, उसके लिए विशेष हम ईश्वर के प्यार में इतना डूबे रहें जो कोई बात न आए। मन और दिल का गहरा कनेक्शन है। दिल में कोई भी सूक्ष्म आश है, इच्छा है वो पूर्ण नहीं हो रही है, तो जो बाबा मेरे को देने चाहता है वो मैं नहीं ले रही हूँ।

बाबा जब डील करता है तब तो बाबा अपनी पॉवर से डील कराता है, इसलिए वो सहज हो जाता है लेकिन प्रैक्टिकली मेरे में इतनी पॉवर हो जो एक सेकंड में अशरीरी हो शान्तिधाम में चली जाऊं फिर सुखधाम में चली जाऊं। ऐसी गुप्त रिहर्सल हो इतनी तमन्ना चाहिए।

दिल और मन इन दोनों का गहरा कनेक्शन है। मन चाहता है शांति में रहूँ, पर दिल में जो बात है, बाबा को भी सुनाते हैं कि बाबा मैं तो अच्छा हूँ, पर यह बात ही ऐसी है ना। जैसे चार रास्ते पर अगर एक सेकंड सोचा नहीं कि इधर जाने से क्या फायदा, इधर जाने से क्या नुकसान, गलत रास्ते पर जाने से नुकसान हो जाता है। इशारा लिखा हुआ भी है कि यहाँ से जाना है लेकिन दिल में कन्फ्यूज़न है, इशारे पर ध्यान नहीं गया तो फिर वापस लौटना पड़ता है।

बाबा ने कहा तुम बच्चों को कभी दिलशिकस्त नहीं होना है। दिलशिकस्त होने के कारण भी कई चले गए, उसको फॉलो करने वाले पैसेन्जर भी रॉन्ग चले जाते हैं, फिर वापस आना पड़ता है, इसमें टाइम तो वेस्ट जाता है ना। टाइम जब वेस्ट होता है तो दिलशिकस्त हो जाते हैं। बाबा ने कहा है - समय बड़ा खज़ाना है, समय बड़ी कमाई कराता है। इसलिए इसे व्यर्थ में नहीं गँवाना।

हमें तीन इंजन मिले तो हम कितने भाग्यशाली हैं...

- राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी



भाग्य विधाता, वरदाता बाप ने हम सभी बच्चों को अनेक वरदान दिए हैं। परन्तु उसमें पहला वर दिया कि तुम सभी शिववंशी हो। एक शिवबाबा के वंश के हो। जिससे पहला-पहला नाता जोड़ा कि हम सब भाई-भाई हैं। दूसरा नाता जोड़ा कि हम ब्रह्मा की औलाद ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। ब्राह्मण कुल के हैं। ऊंच धर्म के, ऊंच कुल के, ऊंच चोटी हैं। तो पहले हम संगम के इस वरदान पर खड़े रहते। भविष्य में तो ऊंच पद पाने का लक्ष्य है ही परन्तु अपने आपको पहले इस स्थिति पर रोज़ देखो कि हम शिव वंशी हैं।

आज बाबा ने कहा - मैं आया हूँ तुम बच्चों को गुप्त दान देने। गुप्त दान यही दिया जो हम सबको अपना बनाया। अपने समान बनाया फिर अपना राज्य-भाग्य दिया। तो पहले खुद को खुद से हरेक पूछे कि बरोबर मुझे ये नशा है कि हम खुदा के बच्चे हैं। सिर्फ बच्चे हैं, नहीं। परन्तु हमें खुदा ने अपना बनाया है, रौरव नर्क में पड़े हुए को अपनी गोदी में बिठाया है। हम इस समय प्यारे बापदादा की गोदी में खेल रहे हैं, पल रहे हैं। हमें उनका लालन-पालन मिल रहा है। फिर वही हमें सारे विश्व की नॉलेज देते, हिस्ट्री सुनाते, सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान दे आप समान नॉलेजफुल बनाते। बाबा ने हमें इंजीनियर्स का इंजीनियर, डॉक्टर्स का डॉक्टर, प्रोफेसर्स का प्रोफेसर सिर्फ एक अल्फ पढ़ाकर बना दिया। इसीलिए हमारी बुद्धि में कभी नहीं आता कि फलाना इतना पढ़ा-लिखा है, यह तो जज है। नहीं, हमें तो बाबा ने जजों का जज बनाया है। वह क्या सत-असत की तुलना करेंगे। हमें सत-असत की पूरी पहचान मिली है। वह डॉक्टर्स थोड़े समय के लिए दवा देंगे, हमें तो बाबा ने ऐसी दवाई दे दी जो 21 जन्मों के लिए हम निरोगी बन जाते हैं। हम ऐसे सर्जन के बच्चे मास्टर सर्जन हैं जो किसी के भी मन का रोग मिटा सकते हैं। मन से तन भी ठीक हो जाता है।

तो हरेक अपने से पूछो - हमसे ऊंचा दुनिया में और कोई है? कोई महान है या हम सबसे ऊंचे से ऊंच हैं? कोई हमसे बड़ा नहीं। हम सबसे बड़े ते बड़े योगी हैं। हम सबसे पवित्र हैं, हम जैसा कोई पवित्र नहीं है। हम ऊंचे ते ऊंचे सतगुरु की श्रीमत पर चलने वाले हैं। वह तो न बाप को फॉलो कर सकते, न टीचर को, न गुरु को। हमें तो तीन इंजन मिली हैं। हमारी गाड़ी तीन इंजन से चल रही है। परम बाप, परम शिक्षक और परम सतगुरु के हम तकदीरवान बच्चे हैं। जब हम अपनी इतनी महान तकदीर रोज़ देखते तो अन्दर से निकलता वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! जो मेरा भाग्य बना वह औरों का भी बने।

हम तो ऊंची चोटी पर बैठे हुए ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण हैं। फिर ब्राह्मण कैसे कहेंगे यह माया आती, यह होता। जैसे कोई छोटी चीज़ का भय बैठ जाता, रस्सी को भी सांप समझ भयभीत हो जाते, वैसे माया है... यह भी भय के भूत का बड़ा सांप दिमाग में रख दिया है। अब सांप तो है ही सांप। वह तो है ही विषैला। वह तो ज़हर ही फूकेगा। सांप से खेलो नहीं, उससे डरते क्यों हो, वह कोई खिलौना नहीं है। सांप है तो किनारा कर लो। 5 विकार भूत हैं लेकिन वह हैं ही भूत, है ही गन्दी चीज़। गन्दी चीज़ को देखेंगे, दृष्टि डालेंगे या उससे किनारा करके चले जाएंगे। उनके पास जाएंगे तो जरूर बदबू आएगी। किनारे हो जाओ तो बदबू से बच जाएंगे। यह है ही छी-छी दुनिया। मैं अगर शौक से पिक्चर देखूंगी तो वह मुझे जरूर खींचेगी। मैंने देखा तो वह जरूर आकर्षित करेगी। मैंने अटेन्शन दिया तो उसने खींचा। अगर हम कहें यह तो डर्टी है, तो वह खींच नहीं सकती। ज़रा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच जरूर होगी।